

अरे घास री रोटी ही

अरे घास री रोटी ही , जद बन बिलावडो ले भाग्यो
नान्हो सो अमरियो चीख पड्यो, राणा रो सोयो दुख जाग्यो
अरे घास री रोटी ही

हुँ लड्यो घणो , हुँ सहयो घणो, मेवाडी मान बचावण न
हुँ पाछ नहि राखी रण में, बैरयां रो खून बहावण में
जद याद करुं हल्दीघाटी , नैणां म रक्त उतर आवै
सुख: दुख रो साथी चेतकडो , सुती सी हूंक जगा जावै
अरे घास री रोटी ही

पण आज बिलखतो देखुं हूं , जद राज कंवर न रोटी न
हुँ क्षात्र धरम न भूलूँ हूँ , भूलूँ हिन्दवाणी चोटी न
महलां म छप्पन भोग झका , मनवार बीना करता कोनी
सोना री थालियां, नीलम रा बजोट बीना धरता कोनी
अरे घास री रोटी ही

ऐ हा झका धरता पगल्या , फूलां री कव्ली सेजां पर
बै आज फिरे भुखा तिरसा , हिन्दवाण सुरज रा टाबर
आ सोच हुई दो टूट तडक , राणा री भीम बजर छाती
आँख्यां में आंसु भर बोल्या , में लीखस्युं अकबर न पाती
पण लिखूं कियां जद देखूँ हूं , आ राडावल ऊंचो हियो लियां
चितौड खड्यो ह मगरा में , विकराल भूत सी लियां छियां
अरे घास री रोटी ही

म झुकूं कियां है आण मन , कुल रा केसरिया बाना री
म बूजू कियां हूँ शेष लपट , आजादी र परवना री
पण फेर अमर री सुण बसकयां , राणा रो हिवडो भर आयो
म मानुं हूँ तिलीसी तन , सम्राट संदेशो कैवायो
राणा रो कागद बाँच हुयो , अकबर रो सपनो सौ सांचो
पण नैण करो बिश्वास नही , जद बांच-बांच न फिर बांच्यो
अरे घास री रोटी ही

कै आज हिमालो पिघल भयो , कै आज हुयो सुरज शीतल
कै आज शेष रो सिर डोल्यो , आ सौच सम्राट हुयो विकल
बस दूत ईशारो जा भाज्या , पिथल न तुरन्त बुलावण न
किरणा रो पिथल आ पहुंच्यो , ओ सांचो भरम मिटावण न
अरे घास री रोटी ही

बीं वीर बांकूड पिथल न , रजपुती गौरव भारी हो
बो क्षात्र धरम को नेमी हो , राणा रो प्रेम पुजारी हो
बैरयां र मन रो कांटो हो , बिकाणो पुत्र करारो हो
राठोड रणा म रहतो हो , बस सागी तेज दुधारो हो

अरे घास री रोटी ही

आ बात बादशाह जाण हो , घावां पर लूण लगावण न
पिथल न तुरन्त बुलायो हो , राणा री हार बंचावण न
महै बान्ध लियो है ,पिथल सुण, पिंजर म जंगली शेर पकड
ओ देख हाथ रो कागद है, तु देख्यां फिरसी कियां अकड
अरे घास री रोटी ही

मर डूब चुंठ भर पाणी म , बस झुठा गाल बजावो हो
प्रण टूट गयो बीं राणा रो , तूं भाट बण्यो बिड्दाव हो
म आज बादशाह धरती रो , मेवाडी पाग पगां म है
अब बता मन,किण रजवट र, रजपूती खून रगा म है
अरे घास री रोटी ही

जद पिथठ कागद ले देखी , राणा री सागी सेनाणी
नीचै से सुं धरती खसक गयी, आँख्या म भर आयो पाणी
पण फेर कही तत्काल संभल, आ बात सपा ही झुठी है
राणा री पाग सदा उंची , राणा री आण अटूटी है
अरे घास री रोटी ही

ल्यो हुकम हुव तो लिख पुछं , राणा र कागद र खातर
ले पूछ भल्या ही पिथल तू ,आ बात सही, बोल्यो अकबर
महै आज सुणी ह , नाहरियो श्यालां र सागे सोवे लो
महै आज सुणी ह , सुरज डो बादल री ओट्यां खोवे लो
महै आज सुणी ह , चातकडो धरती रो पाणी पीवे लो
महै आज सुणी ह , हाथीडो कुकर री जुण्यां जीवे लो || महै आज सुणी ह , थक्या खसम, अब रांड हुवे ली रजपूती
महै आज सुणी ह , म्यानां म तलवार रहवैली अब सुती
तो म्हारो हिवडो कांपे है , मुछ्यां री मौड मरोड गयी
पिथल न राणा लिख भेजो , आ बात कठ तक गिणां सही.
अरे घास री रोटी ही

पिथठ र आखर पढतां ही , राणा री आँख्यां लाल हुई
धिक्कार मन मै कायर हुं , नाहर री एक दकाल हुई
हुं भूख मरूं ,हुं प्यास मरूं, मेवाड धरा आजाद रहे
हुं भोर उजाला म भट्कुं ,पण मन म माँ री याद रहे
हुं रजपुतण रो जायो हुं , रजपुती करज चुकावुंला
ओ शीष पडै , पण पाग नही ,पीढी रो मान हुंकावूं ला
अरे घास री रोटी ही

पिथल क खिमता बादल री,जो रोकै सुर्य उगाली न
सिंहा री हातल सह लेवै, बा कूंख मिली कद स्याली न
धरती रो पाणी पीवे ईसी चातक री चूंच बणी कोनी
कुकर री जूण जीवेलो हाथी री बात सुणी कोनी ||
आ हाथां म तलवार थकां कुण रांड कवै है रजपूती
म्यानां र बदलै बैरयां री छातां म रेवली सुती ||

मेवाड धधकतो अंगारो, आँध्यो म चम – चम चमकलो
कडक र उट्ती ताना पर, पग पग पर खांडो खड्कै लो
राखो थे मुछ्यां ऐंठेडी, लोही री नदीयां बहा दयुंलो
हुँ अथक लडुं लो अकबर सू, उज्ज्यो मेवाड बसा दूलो
जद राणा रो शंदेश गयो पिथल री छाती दूणी ही
हिन्दवाणो सुरज चमको हो, अकबर री दुनिया सुनी ही

बस यूं ही आपका अपना- Chandu Singh Gaur, बीकानेर
Phone no.8608095434

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/2409/title/arre-ghas-re-roti-hi>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |